

Padma Shri



PROF. SOSAMMA IYPE

Prof. Sosamma Iype is the Director of Projects of the Vechur Conservation Trust, an NGO that works towards the conservation of the indigenous cattle breeds of Kerala – the Vechur and the Kasaragod Cows. Conservation of Vechur cows was a saga of undaunted struggle against discouragement, reversals and threats. Yet she was instrumental in bringing them from the brink of extinction, getting the Vechur cow recognized as a breed (the smallest in the world) and enabling Kerala to gain entry into the breed map of India. Her conservation work was the first of its kind in India and due to her tireless efforts, the Food and Agriculture Organization (FAO) of the United Nations has listed the Vechur cattle in their Domestic Animal Diversity Information System (DAD-IS). More important was her contribution at the grassroots level by making the Vechur cows available to farmers and integrating Agriculture with Animal Husbandry through organic farming where native animals have a pivotal role.

2. Born on 21st March, 1941 at Niranam in Alappuzha District, Kerala, Prof. Iype completed her pre-professional studies at the Union Christian College, Aluva and gained admission to the Kerala Veterinary College, Mannuthy. She started her professional career in the Animal Husbandry Department, Government of Kerala where she worked for 14 years. Later, armed with a Master's degree (M. V. Sc.) from the Mathura Veterinary College, Uttar Pradesh, she joined Mannuthy Veterinary College, Kerala Agricultural University as faculty. She later took her Ph. D. degree in Animal Breeding from the National Dairy Research Institute, Karnal, Haryana.

3. Prof. Iype retired as Director, Professor and Head, Centre for Advanced Studies in Animal Breeding and Genetics. During her tenure, she headed several ICAR field-oriented projects. These have led to valuable findings including the medicinal value of Vechur milk as well as its other unique qualities. The Vechur Conservation Project was widely considered a model throughout India and it inspired further identification and characterisation of indigenous cattle breeds, taking the tally from 26 to 44.

4. Prof. Iype has won numerous awards and commendations both for her academic excellence as well as her professional achievements. Some of them are the Commonwealth Bureau Prize for Animal Health (1971), Gold medal from Agra University (1972) and Fellowships from Netherlands Government and Canadian Government for professional training in the respective countries. She represented our country in the SAARC meeting on Conservation in Dhaka in 1991, won the National award for conservation in 1998, the India Biodiversity Award (instituted by UNDP, Ministry of Forest, Environment, and Climate Change and National Biodiversity Authority of India) in 2016 and Dr C. M. Singh Memorial Lifetime Achievement Award in 2020. She has also been decorated with Fellowship of National Academy of Veterinary Sciences.

पद्म श्री



प्रो. सोसाम्मा ऐप्

प्रो. सोसाम्मा ऐप् वेचुर कंजर्वेशन ट्रस्ट की परियोजनाओं की निदेशक हैं, जो एक गैर सरकारी संगठन है जो केरल की स्वदेशी पशु नस्लों — वेचुर और कासरगोड गायों के संरक्षण की दिशा में काम करता है। वेचुर गायों का संरक्षण करना हतोत्साह, उलटफेर और धमकियों के खिलाफ अथक संघर्ष की गाथा थी। फिर भी वह उन्हें विलुप्त होने की कगार से वापिस लाने, वेचुर गाय को एक नस्ल (दुनिया में सबसे छोटी) के रूप में मान्यता दिलाने और केरल को भारत के नस्ल मानचित्र में प्रवेश पाने में सक्षम बनाने में सहायक रही थी। उनका संरक्षण कार्य भारत में अपनी तरह का पहला था और उनके अथक प्रयासों के कारण, संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (एफ.एओ.) ने अपने घरेलू पशु विविधता सूचना प्रणाली (डीएडी-आईएस) में वेचुर मवेशियों को सूचीबद्ध किया है। वेचुर गायों को किसानों के लिए उपलब्ध कराना और जैविक खेती के माध्यम से कृषि को पशुपालन के साथ एकीकृत करना, जहां देशी जानवरों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, जैसे कार्यों में जमीनी स्तर पर उनका योगदान अधिक महत्वपूर्ण था।

2. 21 मार्च, 1941 को केरल के अलाप्पुझा जिले के निरानाम में जन्मी, प्रो. ऐप् ने यूनियन क्रिश्चियन कॉलेज, अलुवा में अपना पेशे से पहले का अध्ययन पूरा किया और केरल पशु चिकित्सा कॉलेज, मन्नुथी में प्रवेश प्राप्त किया। उन्होंने केरल सरकार के पशुपालन विभाग में अपने पेशेवर करियर की शुरुआत की, जहां उन्होंने 14 साल तक काम किया। बाद में, मथुरा वेटेरनरी कॉलेज, उत्तर प्रदेश से मास्टर डिग्री (एम.वी.एससी.) प्राप्त करने के बाद, उन्होंने मन्नुथी वेटेरनरी कॉलेज, केरल कृषि विश्वविद्यालय में फ़ैकल्टी के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। उसके पश्चात उन्होंने राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल, हरियाणा से पशु प्रजनन में पीएचडी की डिग्री हासिल की।

3. प्रो. ऐप् पशु प्रजनन और आनुवंशिकी में उन्नत अध्ययन केंद्र के निदेशक, प्रोफेसर और प्रमुख के पद से सेवानिवृत्त हुईं। अपने कार्यकाल के दौरान, उन्होंने आईसीएआर क्षेत्र-उन्मुख कई परियोजनाओं का नेतृत्व किया। इनसे मूल्यवान निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं, जिसमें वेचुर दूध के औषधीय उपयोग के साथ-साथ इसके अन्य अद्वितीय गुण भी शामिल हैं। वेचुर संरक्षण परियोजना को व्यापक रूप से पूरे भारत में एक मॉडल माना जाता था और इसने स्वदेशी मवेशियों की नस्लों की पहचान और लक्षणों की व्याख्या करने को प्रेरित किया जिससे यह संख्या 26 से 44 पहुंच गयी।

4. प्रो. ऐप् ने अपनी अकादमिक उत्कृष्टता के साथ-साथ अपनी पेशेवर उपलब्धियों के लिए कई पुरस्कार और प्रशंसाएं हासिल की हैं। उनमें से कुछ पशु स्वास्थ्य के लिए राष्ट्रमंडल ब्यूरो पुरस्कार (1971), आगरा विश्वविद्यालय से स्वर्ण पदक (1972) और संबंधित देशों में पेशेवर प्रशिक्षण के लिए नीदरलैंड सरकार और कनाडा सरकार से फ़ैलोशिप हैं। उन्होंने 1991 में ढाका में संरक्षण पर सार्क बैठक में हमारे देश का प्रतिनिधित्व किया, 1998 में संरक्षण के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार जीता, 2016 में भारत जैव विविधता पुरस्कार (यूएनडीपी, वन, पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय और भारतीय राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण द्वारा स्थापित) जीता। 2020 में डॉ. सी.एम. सिंह मेमोरियल लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड जीता। उन्हें राष्ट्रीय पशु चिकित्सा विज्ञान अकादमी की फ़ैलोशिप से भी अलंकृत किया गया है।